IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Concept of ADVAITA Vedanta

MANIDIPA BHATTACHARJEE

- ABSTRACT:

Advaita Vedanta is a specific school of the Hindu darshan Vedanta. Darshans (Sanskrit for viewings, or perspectives) are distinguished by their different approaches to shared philosophical problems and scriptural interpretation. The other five darshans of Hinduism are Samkhya, Yoga, Nyaya, Vaisheshika, and Mimamsa. Vedanta comes from the Sanskrit term for “the end of the Vedas,” meaning that its principle hermeneutic is its focus on the teachings found in the Upanishads.

Advaita means non-dualism in Sanskrit, referring to Advaita Vedanta’s emphasis on the non-duality, or sameness, between atman (the universal soul) and Brahman (the absolute), especially as is expounded in the Upanishads. In addition to the Upanishads, Vedantists draw their philosophical perspective from the Brahma Sutras, a text which elaborates upon the teachings in the Upanishads, and from the Bhagavad Gita.

अद्वैत वेदांत की महत्वपूर्णता

* अमूर्त:

वेदांत भी भारतीय दर्शन को 6 प्रणालियों मे से एक है, और यह सभी विद्यालयों में सबसे ज्यादा आधार बनाता है। वेदांत का मतलब है भारत के सबसे पुराने पवित्र ग्रंथ, तथा वेदों का निष्कर्ष। यह उपनिषदों पर लागू होता है जो वेदों की व्याख्या करते हैं। यह उस विद्यालय पर भी लागू होता है जो उपनिषदों के अध्ययन से निकला है। तीन वेदांत ग्रंथ है उपनिषद् जो सबसे ज्यादा पसंद किए गए ब्रह्म-सूत्र, जो उपनिषदों के सिद्धांतों के संक्षिप्त एक शब्द वोले ग्रंथ हैं और भगवद्गीता जी काव्यात्मक लेखन है।

- प्रस्तावना:

शंकराचार्य भारतीय विचारकों में सबसे महान दार्शनिक थे। उन्होने उपनिषदों में एकालाक प्रवृत्ति पर जोर दिया और इसे एक व्यवस्थित अद्वैतवा के रूप में विकसित किया।

- शंकर वेदान्तु में ईश्वर:

शंकर वेदांत में ईश्वर ही निर्धारिक ब्रह्म है। वह बर्ह्माण्डीय अविद्या (माया) से बद्ध ब्रह्म है। यद्यपि ब्रह्म गुणरहित है फिर भी प्रार्थना के लिए उसे अनुभवजन्य गुणों से संपन्न कहा गया है।

- उदाहरण :

जिस प्रकार सोने से बनी सभी चीजें एक जैसे होती है, परन्तु उनके अलग-अलग होते हैं जैसे अंगूठी, चेन उसी प्रकार इस संसार में प्रत्येक वस्तु एक जैसी (नाम रूप) है परंतु नाम अलग अलग होते है। शंकर कहते हैं कि ब्रहम एक और केवल एक ही वास्तविकता है, जो कुछ भी दिखाई देना है वह सब उसकी (माया की) झलक मात्र है।

- निष्कर्ष :

स्वामी शिवानंद निम्मलिखित स्पष्ठीकरण देते है: माधव ने कहाः मनुष्य भगवान का सेवक है, और उन्होंने अपना द्वैत दर्शन स्थापित किया, रामानुज ने कहा: मनुष्य भगवान की किरण या चिंगारी है और उन्होंने अपना विशिष्टाद्वैत दर्शन स्थापित किया। शंकर ने कहा: मनुष्य ब्रह्म या शाश्वत आत्मा के समान है, और उन्होने अपना अद्वैतदर्शन स्थापित किया।

वेद मन्त्र सुधा- डॉ. कृष्णलाल- वैभुवैभवम् दिल्ली - प्रथम संस्करण-2009 ISBN-81-86702-46-6 □

वेदान्तपरिभाषा - केशवलाल शास्त्री - चौखम्बा संस्कृतप्रतिष्ठान - प्रथम संस्करण 2009 ISBN-81-7084-413-x □

वेदान्तसारः - विपदभञ्जनपाल - संस्कृत पुस्तक भाण्डार कलकाता - नवमसंस्करण -2008 ।

वेदान्तसारः - डॉ. लम्वोदरमिश्र - राष्ट्रिय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर, संस्करण- 2010 ISBN-81-88741-16-7 □

वेदान्तसारः - लोकनाथ चक्रवर्ती - पश्चिमवङ्ग राज्य पुस्तक पर्षत् - प्रथमसंस्करण -2011 ।

वेदान्तसारः -श्रीनृसिंहसरस्वती - चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी- संस्करण-2013 ISBN-978-81-218-0071-4 □